धन, आरोग्य और शुभ आरंभ का पर्व... धनतेरस

समुद्र मंथन से जुड़ी भगवान धन्वंतरि की कथा, यमदीपदान की मान्यता और सोना-चांदी से लेकर झाड़ू व नए बर्तनों तक खरीदारी की विविध परंपराएं



दीपावली के पांच दिवसीय उत्सव का आरंभ धनतेरस से माना जाता है। बाजारों की चमक, सोने-चांदी के आभूषण, नए बर्तन, घरों की सजावट और खरीदारी की चहल-पहल इस पर्व की परिचित पहचान है। लेकिन धनतेरस का महत्व केवल खरीदारी तक सीमित नहीं है। यह दिन धन की देवी लक्ष्मी, देवताओं के वैद्य भगवान धन्वंतरि और मृत्यु के देवता यम से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं का भी प्रतीक है। भारतीय परंपरा में इस पर्व के माध्यम से समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घायु और परिवार की मंगलकामना की जाती है।

धनतेरस को धनत्रयोदशी और धन्वंतरि त्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है। यह कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। चंद्र पंचांग के कारण इसकी अंग्रेजी तारीख हर वर्ष बदलती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इसी दिन भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर समुद्र मंथन से प्रकट हुए थे। इसी कारण धनतेरस को स्वास्थ्य और आरोग्य से जोड़कर देखा जाता है। इस पर्व की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यही है कि इसमें धन और स्वास्थ्य को एक-दूसरे का पूरक माना गया है।

समुद्र मंथन से प्रकट हुए भगवान धन्वंतरि

धनतेरस से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध पौराणिक कथा समुद्र मंथन की है। पुराणों में वर्णित इस प्रसंग के अनुसार, देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया था। इस मंथन से अनेक दिव्य वस्तुएं और विभिन्न रत्न प्रकट हुए। इसी क्रम में भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। उन्हें आयुर्वेद और चिकित्सा ज्ञान का दिव्य अधिष्ठाता माना जाता है।

भगवान धन्वंतरि की प्रतिमा या चित्र में प्राय: उनके हाथों में अमृत कलश और औषधियों से संबंधित प्रतीक दिखाई देते हैं। यह स्वरूप जीवन की रक्षा, रोगों से मुक्ति और आरोग्य की कामना का संदेश देता है। धनतेरस पर उनकी पूजा करने की परंपरा इसी धार्मिक विश्वास से जुड़ी है।

इस कथा का सांस्कृतिक अर्थ भी महत्वपूर्ण है। सामान्यत: धन का संबंध सोना, चांदी, संपत्ति और भौतिक साधनों से जोड़ दिया जाता है, लेकिन धन्वंतरि की उपासना यह स्मरण कराती है कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ जीवन भी अमूल्य संपत्ति हैं। यदि स्वास्थ्य ही अच्छा न हो तो भौतिक समृद्धि का आनंद भी अधूरा रह जाता है। इसलिए धनतेरस को केवल धन अर्जित करने की कामना का पर्व नहीं, बल्कि जीवन और आरोग्य के महत्व को समझने के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है।

देश के अलग-अलग हिस्सों में धनतेरस के विविध रूप

धनतेरस की मूल तिथि और धार्मिक मान्यता व्यापक रूप से समान है, लेकिन इसे मनाने की विधियों और खरीदारी की प्राथमिकताओं में क्षेत्रीय अंतर दिखाई देते हैं।



उत्तर भारत में धनतेरस के अवसर पर सोने-चांदी के आभूषण, सिक्के, पीतल और तांबे के बर्तन खरीदने की परंपरा प्रचलित है। घरों की सफाई और सजावट के बाद लक्ष्मी-गणेश की पूजा की तैयारियां की जाती हैं। शाम को दीप जलाए जाते हैं और कई परिवार यमदीपदान भी करते हैं।

उत्तर भारत में धनतेरस के अवसर पर सोने-चांदी के आभूषण, सिक्के, पीतल और तांबे के बर्तन खरीदने की परंपरा प्रचलित है। घरों की सफाई और सजावट के बाद लक्ष्मी-गणेश की पूजा की तैयारियां की जाती हैं। शाम को दीप जलाए जाते हैं और कई परिवार यमदीपदान भी करते हैं।



महाराष्ट्र और गुजरात सहित पश्चिम भारत के अनेक हिस्सों में धनत्रयोदशी का विशेष महत्व है। महाराष्ट्र में यह दीपावली के कई दिनों तक चलने वाले उत्सव का एक प्रमुख पड़ाव है। गुजरात में धनतेरस के बाद लक्ष्मी पूजन और नववर्ष से जुड़े आयोजन भी व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। व्यापारी प्रतिष्ठानों में शुभ शुरुआत और समृद्धि की कामना की जाती है।

दक्षिण भारत में धन्वंतरि से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं के साथ दीपावली के दूसरे अनुष्ठानों का भी विशेष महत्व है। अलग-अलग राज्यों और समुदायों में पूजा की विधि, दीप जलाने का समय तथा पारंपरिक खानपान अलग हो सकता है। इसलिए पूरे दक्षिण भारत को एक ही रीति से धनतेरस मनाने वाला क्षेत्र मानना उचित नहीं होगा। पूर्वी भारत में भी धनतेरस पर खरीदारी और दीपावली की तैयारियां होती हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में दीपावली की अमावस्या पर मां काली की पूजा का विशेष आकर्षण रहता है। इससे स्पष्ट होता है कि धनतेरस एक व्यापक पर्व का आरंभ है, जबकि उसके बाद के दिनों में क्षेत्रीय धार्मिक परंपराएं अपना अलग स्वरूप ग्रहण करती हैं।







समृद्धि का अर्थ केवल संपत्ति नहीं

धनतेरस की परंपराओं को ध्यान से देखें तो धन की अवधारणा के अनेक अर्थ सामने आते हैं। सोना-चांदी आर्थिक समृद्धि का प्रतीक हैं, नए बर्तन घरेलू जीवन की आवश्यकताओं से जुड़े हैं, भगवान धन्वंतरि स्वास्थ्य और आरोग्य की याद दिलाते हैं, जबकि यमदीपदान जीवन की सुरक्षा और दीर्घायु की कामना से जुड़ा है। आज के समय में इस पर्व का एक व्यावहारिक संदेश यह भी है कि खरीदारी अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार की जाए। शुभ मुहूर्त में खरीदारी करने के लिए अनावश्यक कर्ज लेना या दूसरों की देखा-देखी खर्च बढ़ाना जरूरी नहीं है। छोटी-सी वस्तु खरीदकर, घर में दीप जलाकर या परिवार के साथ पूजा करके भी धनतेरस की परंपरा निभाई जा सकती है।धनतेरस का वास्तविक महत्व इसी संतुलन में है। यह पर्व हमें समृद्धि की आकांक्षा के साथ स्वास्थ्य, सुरक्षा, संतोष और पारिवारिक सुख का महत्व भी समझाता है। भगवान धन्वंतरि की आराधना से लेकर यमदीपदान तक इसकी परंपराएं जीवन के अलग-अलग पक्षों को स्पर्श करती हैं। इसलिए धनतेरस को केवल बाजारों की चहल-पहल या सोने-चांदी की बिक्री के आंकड़ों से नहीं समझा जा सकता। यह भारतीय समाज की उस सांस्कृतिक सोच का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें धन के साथ आरोग्य, शुभता और जीवन की निरंतरता को भी महत्व दिया गया है। दीपावली के प्रकाश पर्व की शुरुआत करने वाला धनतेरस इसी भावना का संदेश देता है कि सच्ची समृद्धि वही है, जिसमें घर में सुख हो, परिवार स्वस्थ रहे और जीवन आशा तथा संतोष से भरा हो।

दीपावली के प्रकाश पर्व की शुरुआत करने वाला धनतेरस इसी भावना का संदेश देता है कि सच्ची समृद्धि वही है, जिसमें घर में सुख हो, परिवार स्वस्थ रहे और जीवन आशा तथा संतोष से भरा हो।

यमदीपदान: मृत्यु के भय से मुक्ति की कामना

धनतेरस की एक महत्वपूर्ण परंपरा यमदीपदान है। इसमें संध्या के समय घर के बाहर दीप जलाकर यमराज से परिवार की रक्षा और अकाल मृत्यु से बचाव की प्रार्थना की जाती है। कई परिवारों में यह दीप मुख्य द्वार के बाहर दक्षिण दिशा की ओर रखा जाता है। हालांकि इसकी विधि और मान्यताओं में क्षेत्र तथा परिवार के अनुसार अंतर हो सकता है।

यमदीपदान से राजा हिम की कथा भी जुड़ी हुई है। लोकप्रिय धार्मिक कथा के अनुसार, राजा हिम के पुत्र की कुंडली में विवाह के चौथे दिन मृत्यु का योग बताया गया था। भविष्यवाणी को निष्फल करने के लिए उसकी पत्नी ने रातभर जागकर घर के द्वार पर दीप जलाए और सोने-चांदी के आभूषण तथा दूसरी चमकीली वस्तुएं द्वार पर रख दीं। कथा में बताया जाता है कि यमराज सर्प का रूप लेकर आए, लेकिन दीपों की रोशनी और चमक से उनका ध्यान भटक गया। इस प्रकार राजकुमार का जीवन बच गया।



यह कथा धार्मिक लोकविश्वास के रूप में प्रचलित है, इसे प्रमाणित ऐतिहासिक घटना नहीं माना जाना चाहिए। इसका सांस्कृतिक संदेश जीवन की रक्षा, परिवार के प्रति प्रेम और संकट से बचाव की कामना से जुड़ा है। धनतेरस के दिन जलाया जाने वाला यह दीप उत्सव के आरंभ में ही जीवन के महत्व की याद दिलाता है।

धनतेरस और आयुर्वेद का संबंध

भगवान धन्वंतरि को आयुर्वेद का दिव्य अधिष्ठाता माना जाता है। इसीलिए धनतेरस को धन्वंतरि जयंती के रूप में भी जाना जाता है। आयुर्वेद की भारतीय परंपरा में शरीर, मन, आहार, दिनचर्या और प्रकृति के साथ संतुलन को महत्वपूर्ण माना गया है। धन्वंतरि की पूजा इसी आरोग्य परंपरा का धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक है। भारत सरकार ने वर्ष 2016 से धन्वंतरि जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने की परंपरा शुरू की थी। वर्ष 2025 से आयुर्वेद दिवस के लिए 23 सितंबर की निश्चित वार्षिक तारीख निर्धारित कर दी गई है। इसलिए अब आयुर्वेद दिवस और धनतेरस को हर वर्ष एक ही दिन पड़ने वाला आयोजन नहीं माना जाना चाहिए। इसके बावजूद धनतेरस और भगवान धन्वंतरि के बीच पारंपरिक धार्मिक संबंध बना हुआ है। इस संबंध का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि स्वास्थ्य को समृद्ध जीवन का आधार समझा जाए। त्योहारों के दौरान खानपान, दिनचर्या और व्यक्तिगत स्वास्थ्य की उपेक्षा न करना भी इसी व्यापक भावना के अनुरूप है। भगवान धन्वंतरि की उपासना को चिकित्सा विज्ञान के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि आरोग्य के प्रति भारतीय सांस्कृतिक सम्मान के रूप में समझना चाहिए।



धनतेरस पर खरीदारी की परंपरा ...

धनतेरस के दिन सोना, चांदी, आभूषण और नए बर्तन खरीदने की परंपरा व्यापक रूप से प्रचलित है। कई परिवार वाहन, घरेलू उपकरण, संपत्ति या दैनिक उपयोग की दूसरी वस्तुएं भी खरीदते हैं। माना जाता है कि इस दिन घर में नई वस्तु लाना शुभता और समृद्धि के स्वागत का प्रतीक है।





परंपरागत भारतीय समाज में धातुओं के बर्तनों का घरेलू जीवन में विशेष महत्व रहा है। पीतल, तांबे और कांसे के बर्तन लंबे समय तक घरों की आवश्यक वस्तुओं में शामिल रहे। इसलिए त्योहारों के अवसर पर नए बर्तन खरीदना धार्मिक शुभता के साथ घरेलू जरूरतों की पूर्ति से भी जुड़ा रहा होगा। समय के साथ इस परंपरा में सोने-चांदी के आभूषण, सिक्के, वाहन और आधुनिक उपभोक्ता वस्तुएं भी शामिल होती गईं।

हालांकि यह समझना जरूरी है कि धनतेरस पर सोना या चांदी खरीदना प्रत्येक परिवार के लिए अनिवार्य धार्मिक नियम नहीं है। अनेक परिवार अपनी सामर्थ्य के अनुसार छोटे बर्तन, पूजा सामग्री या दैनिक उपयोग की वस्तुएं खरीदते हैं। कुछ लोग केवल दीप जलाकर और पूजा करके भी इस पर्व को मनाते हैं। धार्मिक परंपरा का मूल भाव शुभता का स्वागत है, न कि अधिक खर्च करना।

धनतेरस पर झाड़ू खरीदने की परंपरा

धनतेरस पर झाड़ू खरीदना भी अनेक परिवारों में शुभ माना जाता है। झाड़ू घर की सफाई और व्यवस्था का प्रतीक है। दीपावली से पहले घर की सफाई करने की परंपरा के साथ इसका सांस्कृतिक संबंध समझा जा सकता है। लोकमान्यता में स्वच्छ घर को शुभता और समृद्धि के स्वागत से जोड़ा जाता है।

कुछ परिवार इस दिन नमक, धनिया या दैनिक उपयोग की दूसरी छोटी वस्तुएं भी खरीदते हैं। ये प्रथाएं हर जगह समान रूप से प्रचलित नहीं हैं, लेकिन इनसे यह स्पष्ट होता है कि धनतेरस की शुभ खरीदारी केवल महंगी धातुओं तक सीमित नहीं है। परिवार अपनी सुविधा और परंपरा के अनुसार वस्तुओं का चयन करते हैं।

